यीशु की जंगल में परीक्षा होती है

मत्ती ४:१-११; मरकुस १:१२-१३; लूका ४:१-१३

खोदाई: येशु को किन परिस्थितियों में प्रलोभन दिया गया? तीन प्रलोभनों में से प्रत्येक के लिए: इसकी प्रकृति क्या थी? संभावित रूप से यीशु को क्या आकर्षित कर सकता है? अगर वह इसमें देना चाहे तो इसकी क्या कीमत होगी? सत्रु या शैतान का पवित्रशास्त्र का उपयोग प्रभु के उपयोग करने के तरीके से कैसे भिन्न है? मसीह ने अपने प्रलोभनों के दौरान शैतान का मुकाबला कैसे किया? सभी परीक्षाओं को परमेश्वर के दिव्य पुत्र के विरुद्ध क्यों निर्देशित किया गया था, जबकि अभी-अभी मसीहा के बपतिस्मा में इसकी पुष्टि की गई थी? स्वर्ग के नाम पर यहोवा ने अपने पुत्र को इन सब से क्यों गुजरने दिया?

प्रतिबिंबः परमेश्वर ने आपको किस आत्मिक जंगल में भेजा है? उसके प्रेम की आपकी समझ के लिए इसने क्या किया है? इसने आपको कैसे बदला? ध्यान दें कि प्रलोभक ने यीशु पर तब हमला किया जब वह कमजोर था। वह हमारे साथ भी यही हथकंडा अपनाता है। यदि धोखेबाज़ को आप पर तीन गोलियाँ मारनी हों, तो वह कौन से तीन प्रलोभनों का प्रयोग करेगा? अभी आपका सबसे बड़ा प्रलोभन क्या है? हमें अपनी परीक्षाओं के द्वारा शैतान का मुकाबला कैसे करना चाहिए (इफिसियों ६:१०-१७)?

मसीह के बपतिस्म और उसकी परीक्षा के बीच के स्पष्ट संबंध को नहीं भूलना चाहिए। यह संबंध दो तरह से देखा जाता है। पहला, **अपने** बपतिस्म के समय **उसने** कहा कि वह सारी धार्मिकता को पूरा करने आया है। **यीशु** की परीक्षाओं में, इस धार्मिकता की परीक्षा हुई। दूसरे, **यीशु** के बपतिस्म के समय **उसे परमेश्वर पिता** द्वारा **परमेश्वर का पुत्र** घोषित किया गया था। यीशु के प्रलोभनों में, वह इसे साबित करने के लिए प्रलोभित होगा।

एडोनाई और बेल्जबुब दोनों का तीन प्रलोभनों के लिए एक उद्देश्य था। **शैतान का उद्देश्य मसीह से पाप कराना था।** इसका मतलब यह था कि **यीशु** को उसके मसीहा के लक्ष्य के लिए एक छोटा रास्ता देकर **उसे** क्रूस से दूर रखा जाए, जो कि **मसीह** के लिए दुनिया के सभी राज्यों को विरासत में देना और शासन करना था। यह वही है जो **दुष्ट ने** उसे दिया था। जबकि **शैतान मसीहा** को मरवाना चाहता था, वह नहीं चाहता था कि वह उचित समय पर (फसह) या उचित तरीके से मरे (क्रूस पर चढ़ाया जाए)। यही कारण है कि **यीशु** के जीवन और सेवकाई के दौरान गलत तरीके से जैसे तलवार या पत्थर मार कर उसे समय से पहले मारने के कई प्रयास हुए। यदि परमेश्वर का पुत्र किसी अन्य समय में मर गया होता, या किसी अन्य तरीके से कोई प्रायश्चित नहीं होता **(देखें निर्गमन पर मेरी व्याख्या Bz – प्रायश्चित)**। **परमेश्वर का उद्देश्य अपने पुत्र की निष्पापता को प्रमाणित करना था। योहोवः** न केवल यह साबित करना चाहता था कि यीशु स्वयं को पाप करने से रोकने में सक्षम था, बल्कि इससे भी महत्वपूर्ण बात यह साबित करना था कि **मसीह** पाप करने में भी सक्षम नहीं था।

रब्बी साहित्य में, राक्षसों के राजकुमार को तीन विशिष्ट कार्यों में शामिल बताया गया है - वह लोगों को बहकाता है, वह उन्हें परमेश्वर के सामने आरोपित करता है, और वह मौत की सजा लाता है (ट्रैक्टेट बावा बत्रा १६a)। यह भी कहा जाता है कि धोखेबाज ने चालीस दिनों के बाद, इसराइल में उथल-पुथल मचाने और संदेह पैदा करने के बाद जंगल में सुनहरी बछड़े की घटना को उकसाया (निर्गमन Gr पर मेरी टिप्पणी देखें - हारून ने एक बछड़े के आकार में एक मूर्ति बनाई) पहाड़ से मोशे की वापसी पर (ट्रैक्टेट शब्बत ८९a)। सृष्टि से पहले **अपने** विद्रोह के बाद से, **लूसिफ़ेर** ने **एडोनाई** की योजना का विरोध किया है। आश्चर्य की बात नहीं है, वह **प्राचीन सर्प यीशु** का विरोध करने के लिए आता है, फिर भी **परमेश्वर पिता** इसका उपयोग अपने पुत्र को मसीहाई मिशन के लिए परखने और तैयार करने के लिए करेगा।

जैसा कि अर्नोल्ड फ्रुचटेनबौम बताते हैं, **मसीहा** प्रलोभनों में लोगों के दो समूहों के लिए एक प्रतिनिधि भूमिका निभाता है। **पहला, वह पाँच प्रकार से इस्राएल का प्रतिनिधि था।** पहला, **परमेश्वर के पुत्र** शब्द के प्रयोग में। जबकि **इज़राइल** राष्ट्रीय रूप से ईश्वर का पुत्र है, यीशु व्यक्तिगत रूप से ईश्वर का पुत्र है। यह दिखाने के लिए है कि **इस्राएल** कहाँ आज्ञाकारी नहीं था, **मसीहा** आज्ञाकारी था; जहां इस्राएल असफल हुआ, वहां **मसीह** सफल हुआ। इस्राएल को परमेश्वर का पुत्र कहा जाता है **(निर्गमन ४:२२-२३; होशे ११:१)**, और यीशु को **परमेश्वर का पुत्र** कहा जाता है।

इन प्रलोभनों में **येशु** और **इज़राइल** के बीच इस संबंध को देखने का **दूसरा** तरीका यह है कि दोनों परीक्षण **जंगल** में हुए। पहला **कुरिन्थियों १०:१-१३** कहता है कि जंगल केवल **इस्राएल** के लिए सीनै और प्रतिज्ञा की भूमि के बीच से होकर जाने का स्थान नहीं था; यह वह स्थान भी था जहाँ **परमेश्वर** इस्राएल की निष्ठा और विश्वासयोग्यता की परीक्षा ले रहा था। **मसीहा** का भी **जंगल** में परीक्षण किया गया था। **मरकुस १:१३** कहता है कि यीशु चालीस दिन तक जंगल में रहा। **मत्ती ४:१ और लूका ४:१** दोनों एक ही बात कहते हैं। उसे **इस्राएल** की तरह जंगल में ले जाया गया था, और उसी कारण से: परखे जाने के लिए।

येशुआ और **इज़राइल** के बीच इस प्रतिनिधि भूमिका को **तीसरे** तरीके से चित्र चालीस में देखा जा सकता है। **इस्राएल** की **चालीस वर्षों तक परीक्षा हुई (व्यवस्थाविवरण ८:२), यीशु** की चालीस दिनों तक **बड़े अजगर** द्वारा **परीक्षा** की गई। यह हिब्रू शब्द शैतान का एक उपयुक्त अनुवाद है, क्योंकि यह पतित देवदूत का वर्णन करता है जो उन सभी का विरोध करता है जो भगवान स्थापित करने की कोशिश कर रहे हैं। हिब्रू शब्द परीक्षा एक वर्तमान काल का कृदंत है, और निरंतर कार्रवाई की बात करता है। **शैतान चालीस दिन** तक लगातार **मसीहा** की परीक्षा करता रहा।

इन प्रलोभनों में **यीशु** और **इस्राएल** के बीच के संबंध को **चौथा** तरीका **आत्मा** की उपस्थिति के द्वारा दर्शाया गया है। **पवित्र आत्मा इस्राएल** के साथ जंगल में मौजूद था **जंगल (यशायाह ६३:७-१४)**, और **पवित्र आत्मा यीशु** के साथ जंगल में उपस्थित था। **यीशु, आत्मा से भरे हुए, जॉर्डन को छोड़ दिया और तुरंत आत्मा द्वारा यहूदिया के जंगल में ले जाया गया**, जिसमें रेगिस्तान और तलहटी शामिल है **(मरकुस १:१२)**। संचालित शब्द एक बहुत ही मजबूत शब्द है (एकबलो से, शाब्दिक रूप से बाहर

फेंकने के लिए, बाहर निकालने के लिए)। वास करने वाले **परमेश्वर के आत्मा** का पहला कार्य **मसीहा** को परीक्षण और प्रलोभन के स्थान पर लाना था।

इन प्रलोभनों में **परमेश्वर के पुत्र** और **इस्राएल** के बीच संबंध का **पाँचवाँ** तरीका यह है कि जब उसने पवित्रशास्त्र के माध्यम से **आत्माओं के शत्रु** का विरोध किया, तो **येशु** की तीनों प्रतिक्रियाएँ **व्यवस्थाविवरण** की पुस्तक से आईं। माउंट सिनाई के पैर में उनके **जंगल** भटकने से पहले प्राप्त हुआ, **व्यवस्थाविवरण** की पुस्तक एडोनाई और इज़राइल के बीच की वाचा की किताब है। **व्यवस्थाविवरण** शब्द का अर्थ दूसरा नियम है क्योंकि यह **निर्गमन**, **लेबी** और **गिनती** में पहले से पाई गई कई आज्ञाओं के सारांश के रूप में कार्य करता है। हालाँकि, **व्यवस्थाविवरण** का उद्देश्य केवल उन आज्ञाओं को दोहराना नहीं है, बल्कि उन्हें एक प्राचीन अनुबंध या वाचा के प्रारूप में रखना है। तब, यह कोई दुर्घटना नहीं थी, कि **यीशु** ने परीक्षा के समय **व्यवस्थाविवरण** की पुस्तक से उद्धृत किया, क्योंकि यह **इस्राएल** के राष्ट्र के साथ **यहोवा** की वाचा है।

इन पाँच तरीकों से, **मसीहा** ने **इस्राएल** की ओर से एक प्रतिनिधि भूमिका निभाई। मुद्दा यह है कि जहाँ **इस्राएल**, **परमेश्वर** का राष्ट्रीय पुत्र, असफल हुआ; **यीशु**, अद्वितीय, शाश्वत, **परमेश्वर का व्यक्तिगत पुत्र**, **इस्राएल** की ओर से सफल हुआ। **वह** न केवल इन तीन परीक्षाओं में, बल्कि अंतिम विकल्प के रूप में, **पाप** के लिए बलिदान के रूप में, इस्राएल का स्थानापन्न बन गया।

दूसरे, येशु ने समस्त मानव जाति के लिए प्रतिनिधि भूमिका निभाई। बाइबल सिखाती है कि **हमारा ऐसा महायाजक नहीं जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके, परन्तु वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया - तौभी वह निष्पाप निकला (इब्रानियों ४:१५)।** इसका मतलब यह नहीं है कि हम हर तरह से **परखे** गए हैं जैसे **वह** था, या कि वह हर तरह से **परखा** गया था जैसे हम हैं। उदाहरण के लिए, मुझे कभी **पत्थर को रोटी** में बदलने का मोह नहीं रहा। या **मशीहा** को कभी भी टेलीविजन पर सोप ओपेरा देखने में अपना पूरा दिन बर्बाद करने का लालच नहीं हुआ। इसका अर्थ है कि हम **उन्हीं** तीन श्रेणियों में **परीक्षाओं** को सहते हैं जिन्हें यीशु ने परीक्षाओं में सहा था: संसार की प्रत्येक वस्तु के लिए - **शरीर की अभिलाषा** (पहला प्रलोभन), **आँखों की लालसा** (तीसरा प्रलोभन), **और जीवन का घमण्ड**। दूसरी परीक्षा) - **पिता की ओर से नहीं परन्तु संसार की ओर से आती है (पहला यूहन्ना २:१६)**। तो प्रत्येक विशिष्ट प्रलोभन इन तीन श्रेणियों में से एक में गिरेगा।

पहली परीक्षा: चालीस दिन और चालीस रात उपवास करने के बाद, वह भूखा था और शैतान ने उसकी परीक्षा की (मत्ती ४:२; लूका ४:२)। चालीस दिन और चालीस रात का उपवास **मत्ति** पाठकों को परिचित लगेगा, क्योंकि यह मूसा **(निर्गमन ३४:२८)** और एलिय्याह **(प्रथम राजा १९:८)** दोनों के अनुभव के समानांतर है। **चालीस दिनों तक उपवास करने के बाद, मत्ती** और **लूका** दोनों रिकॉर्ड करते हैं जो एक स्पष्ट समझ प्रतीत होती है - कि **वह भूखा था**। उपवास के पहले भूख के दर्द में, एक व्यक्ति के पास समय की एक विस्तारित अवधि हो सकती है, जिसके दौरान शरीर भोजन की कमी से कोई बुरा प्रभाव नहीं डालता है क्योंकि यह संग्रहीत अतिरिक्त वसा को आकर्षित करता है। लेकिन उपवास के लगभग **चालीस दिनों** के बाद, कुछ नई पीड़ाएँ होंगी। ये केवल भूख के कारण नहीं हैं बल्कि वास्तव में संकेत

देते हैं कि शरीर खुद को भूखा रखना शुरू कर रहा है। जब **बड़ा अजगर** तीन अविश्वसनीय परीक्षाओं में से पहली परीक्षा लेकर **उसके** पास आया तो **यीशु** एक महत्वपूर्ण मोड़ पर था।

पहला परीक्षण इस दावे पर केन्द्रित है कि **यीशु परमेश्वर का पुत्र** है। **परखने वाला उसके पास आया और कहा: यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे कि ये पत्थर रोटी बन जाएं (मत्ती ४:३; लूका ४:३)।** **शैतान** ने सबसे पहले सुझाव दिया कि मसीह को अपने लिए क्या करना चाहिए। यह पहला प्रलोभन अनिवार्य रूप से वही उपहासपूर्ण ताना था जो भीड़ ने सूली पर चढ़ाए जाने के समय बनाया था: यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो क्रूस पर से उतर आ। इसमें दूसरे आदम **(प्रथम कुरिन्थियों १५:४५-४७)** को विफल करने का दुष्ट प्रयास भी शामिल था जहाँ पहला आदम विफल हो गया था - भोजन के संबंध में। **धोकेबाज** चाहता था कि **मसीहा रोटी** के कारण असफल हो जाए, जैसे आदम फल के कारण अस **फल** हो गया था **(उत्पत्ति ३:१-७)**। हालाँकि, इन सबसे ऊपर, वह पिता के विरुद्ध पुत्र के विद्रोह की याचना करना चाहता था। यह **येशु** के **परमेश्वर** के साथ संबंध की परीक्षा थी।

शत्रु ने शरीर की लालसा से **यीशु की परीक्षा की** क्योंकि चालीस दिन और **चालीस रात के बाद रोटी का प्रलोभन वस्तुतः** भारी रहा होगा **(पहला यूहन्ना २:१६a)।** हमें याद रखना चाहिए कि **मसीह** एक सौ प्रतिशत **परमेश्वर** और एक सौ प्रतिशत मनुष्य थे। नतीजतन, **उनकी** मानवता में यीशु भूख की पूरी ताकत महसूस कर सकता था। लेकिन अपने दैवीय स्वभाव के कारण, **वह** ऐसी परीक्षा में नहीं दे सका। यह उसे पापरहित **मुक्तिदाता** होने के अयोग्य ठहरा देता। **क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दु:खी न हो सके; वरन् वह सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी उस ने पाप नहीं किया (इब्रानियों ४:१५)।**

यह **पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर** के बीच पूर्ण विश्वास और समर्पण था जिसे **प्राचीन सर्प** ने चकनाचूर करने की कोशिश की थी। सफल होने के लिए ट्रिनिटी में एक अपूरणीय दरार डाल दी होगी। वे अब थ्री इन वन नहीं होते, अब एक दिमाग और उद्देश्य के नहीं होते। अपने अगणनीय अभिमान और दुष्टता में, **राक्षसों के राजकुमार** ने स्वयं **परमेश्वर** के स्वभाव को खंडित करने का प्रयास किया।

यीशु ने **व्यवस्थाविवरण 8:3** का हवाला देते हुए उत्तर दिया जहाँ **इस्राएल** की भूख से परीक्षा हुई थी ताकि **वह परमेश्वर** पर निर्भरता सीख सके। लेकिन वह ऐसा करने में असफल रही। हालाँकि, **यीशु** यह कहकर सफल हुआ: **यह लिखा है: "मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो यहोवा के मुख से निकलता है जीवित रहेगा" (मत्तीयाहू ४:४; लूका ४:४)**। यदि **शैतान** से लड़ने के लिए **परमेश्वर** का वचन **उसका** एकमात्र संसाधन था, तो क्या हमें यह नहीं मानना चाहिए कि यह हमारा भी होना चाहिए? मुख्य "भोजन" जो परमेश्वर ने हमें मजबूत करने के लिए दिया है वह है बाइबल, **परमेश्वर** का वचन।

दूसरा प्रलोभन: दुष्ट ने पहले सुझाव दिया था कि **मसीह** को **अपने** लिए क्या करना चाहिए (पत्थरों को रोटी में बदलना)। इसके बाद **उसने** सुझाव दिया कि **पिता** को **येशु** के लिए क्या करना चाहिए (अपने **पुत्र** को बचाने के लिए अपने **स्वर्गदूतों** को भेजकर **यीशु** के प्रति **पिता** के प्रेम को प्रमाणित

करना)। अपने स्वयं के हितों की पूर्ति के लिए मसीहा को अपनी दिव्य शक्तियों का उपयोग करने के लिए प्रेरित करने में विफल रहने और इस तरह से **अपने पिता** की इच्छा के विरुद्ध विद्रोह करने के बाद, **धोखेबाज** अपने **स्वर्गीय पिता** के प्रेम और शक्ति की परीक्षा लेने के लिए **पुत्र** को लुभाता रहा। तब **शैतान उसे पवित्र नगर यरूशलेम में ले गया और उसे मंदिर पर्वत के उच्चतम बिंदु पर खड़ा कर दिया (मत्ती ४:५; लूका ४:९a)**। टेंपल माउंट के दक्षिण-पूर्व कोने में चक्करदार सहूलियत बिंदु विशेष रूप से रॉयल स्टोआ से था। **मत्ति** और **लुका** दोनों एक ही ग्रीक शब्द तेर्गिओं का उपयोग करते हैं, जो पेत्र्यक्स या विंग का एक छोटा रूप है। नई वाचा के समय में, तेर्गिओं आम तौर पर किसी चीज़ के सबसे बाहरी भाग का वर्णन करता है। इसलिए, इस अभिव्यक्ति का अनुवाद टॉवर, शिखर, शीर्ष, चोटी या चरम बिंदु **(देखें Mx - दूसरा मंदिर और किले एंटोनिया का अवलोकन)** किया जा सकता है।

मत्ति और **लुका** दोनों के पास तेर्गिओं से पहले आने वाला निश्चित लेख है, जो इंगित करता है कि एक विशिष्ट, प्रसिद्ध **उच्चतम बिंदु** से निपटा जा रहा है। इतना ही नहीं, लेकिन दोनों लेखकों ने **पहाड़ मंदिर** के **उच्चतम बिंदु** की अभिव्यक्ति के लिए हिरोन या टेंपल माउंट शब्द का प्रयोग किया है, नाओस या अभयारण्य का नहीं। एक बार यह समझ में आने के बाद, स्पॉट की पहचान करना आसान हो जाता है। पूरे **पहाड़ मंदिर** में सबसे प्रभावशाली सहूलियत बिंदु का वर्णन यहूदी इतिहासकार जोसेफस ने किया है। उन्होंने लिखा: रॉयल स्टोआ एक संरचना थी जो सूर्य के नीचे किसी भी संरचना से अधिक उल्लेखनीय थी। स्टोआ की ऊंचाई के साथ मिलकर खड्ड की गहराई [नीचे] इतनी अधिक थी कि कोई भी [हिम्मत] [किनारे] पर झुकने की हिम्मत नहीं करेगा क्योंकि वह इतना चक्कर खाएगा कि वह अंत नहीं देख पाएगा मापहीन गहराई का (पठनीयता के लिए व्याख्या)। जोसेफस ने यह भी बताया कि घाटी के तल में गिरावट लगभग ४५० फीट थी। प्रारंभिक परंपरा के अनुसार, **याकूब**, **यीशु** के भाई और सिय्योन मण्डली के प्रमुख को शाही स्टोआ से फेंके जाने के कारण शहीद कर दिया गया था क्योंकि वह अपने विश्वास का त्याग नहीं करेगा।

तानाख पर एक मिड्रैश, इस सटीक स्थान पर विशेष जोर देता है, जैसा कि यह कहता है: **हमारे शिक्षकों ने सिखाया, उस समय जब राजा मसीह प्रकट होंगे, वह आएंगे और मंदिर की छत पर खड़े होंगे। वह इस्राएल में प्रचार करेगा और नम्र लोगों से कहेगा, "तुम्हारे छुटकारे का समय आ गया है" (पेशिक्ता रब्बती ३६)**।

अभी भी अपने दिव्य **पुत्र** के रूप में **प्रभु** के साथ **परमेश्वर** के संबंध को कमजोर करने की उम्मीद करते हुए, **प्राचीन सर्प** ने फिर से शब्दों के साथ अपने प्रलोभन का परिचय दिया: **यदि आप परमेश्वर के पुत्र हैं, तो अपने आप को यहां से नीचे फेंक दें।** पहले प्रलोभन में एक आवश्यकता (भोजन की कमी) पहले से मौजूद थी; दूसरे में एक आवश्यकता निर्मित हुई। प्रलोभन को और अधिक प्रेरक बनाने के लिए, **बड़े अजगर** ने पवित्रशास्त्र का हवाला दिया, जैसा कि यीशु ने अभी-अभी किया था। **भजन संहिता ९१:११-१२ का हवाला देते हुए उसने कहा: क्योंकि लिखा है, "वह तेरे विषय में अपने दूतों को आज्ञा देगा, कि वे तेरी रक्षा करें; और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे" (मत्ती ४:६; लूका ९b-१०)**।

भजन ९१:११-१२ को उद्धृत करने के उस सूक्ष्म और चतुर मोड़ के साथ, **धोखेबाज** ने सोचा कि **उसने मसीहा** को एक कोने में पीछे कर दिया है। यह ऐसा है जैसे **शैतान** कह रहा हो, "आप **परमेश्वर के पुत्र** होने का दावा करते हैं और उसके वचन पर भरोसा करते हैं, तो आप अपने **पुत्रत्व** का प्रदर्शन क्यों नहीं करते और उसके वचन की सच्चाई को उसकी **परीक्षा** - एक पवित्र शास्त्र की **परीक्षा** में डालकर प्रमाणित नहीं करते? यदि आप अपनी सहायता के लिए अपनी स्वयं की दिव्य शक्ति का उपयोग नहीं करेंगे, तो अपने पिता को अपनी दिव्य शक्ति का उपयोग करने दें। यीशु के लिए **शैतान** के सुझाव का पालन करने के लिए स्वर्गीय स्वर्गदूतों द्वारा बचाए जाने के लिए, कई यहूदियों की नज़र में, यह पक्का सबूत होता कि **वह मसीहा** था।

चमत्कारी ने हमेशा मांस से अपील की है। बाद में, **यीशु ने स्वयं** इसके विरुद्ध चेतावनी दी थी जब उसने चेतावनी दी थी कि **झूठे मसीहा और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रकट होंगे और यदि संभव हो तो चुने हुओं को भी भरमाने के लिए बड़े चिह्न और अद्भुत काम दिखाएँगे (मत्ति २४:२४)**। लेकिन ऐसे नाटकीय संकेत, तब भी जब वे **परमेश्वर** की ओर से हैं, **विश्वास** पैदा मत करो; वे केवल उन लोगों के विश्वास को मजबूत करते हैं जो पहले से ही विश्वास करते हैं। वही सूरज मोम को नर्म और मिट्टी को सख्त करता है। **प्रभु** स्वयं मानवजाति को यहोवा द्वारा दिया गया अब तक का सबसे बड़ा चिन्ह था, फिर भी, जैसा कि यशायाह ने सैकड़ों साल पहले भविष्यवाणी की थी: **मानव जाति द्वारा उसका तिरस्कार और तिरस्कार किया गया था (यशायाह ५३:३; लूका १८:३१-३३)**। वे जो केवल उनके चमत्कारों के कारण ही उनकी स्तुति गाएंगे और प्रभावशाली शब्द बाद में उनके खिलाफ हो जाएंगे। यह परीक्षा यीशु को यह साबित करने के लिए थी कि वह वास्तव में परमेश्वर का पुत्र था। इस प्रकार, **शैतान ने फिर से** जीवन के अभिमान के साथ **उसकी परीक्षा ली**, जो वास्तव में, प्रभु पर यीशु की निर्भरता पर एक परीक्षा थी।

यीशु के पास सस्ते, विश्वासहीन सनसनीखेज का कोई हिस्सा नहीं होगा। इसलिए **उसने व्यवस्थाविवरण ६:१६** का हवाला देते हुए जवाब दिया, जहाँ इस्राएल की प्यास के साथ परीक्षा हुई थी ताकि वह **परमेश्वर** पर निर्भरता सीख सके (निर्गमन **Cu पर मेरी टिप्पणी देखें -** चट्टान पर प्रहार करें और उसमें से पानी निकलेगा)। लेकिन जहाँ वह **परमेश्वर** पर भरोसा करने में विफल रही, **यीशु** ने **शैतान** को यह कहते हुए उत्तर दिया: **यह भी लिखा है: "अपने परमेश्वर यहोवा की परीक्षा न लेना" (मत्ती ४:७; लूका ४:१२)**। यीशु को स्वयं को यह प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं थी कि पिता ने उससे प्रेम किया और उसकी रक्षा की। इसके अलावा, वह जानता था कि **परमेश्वर** के प्रेम और सुरक्षा को **विश्वास** के अलावा किसी भी तरह से साबित नहीं किया जा सकता है। जैसा कि इब्रानियों का लेखक कहेगा: **अब विश्वास उस पर भरोसा है जिसकी हम आशा करते हैं, और उस की भी प्रतीति है जिसे हम नहीं देखते (इब्रानियों ११:१)। क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है - और यह तुम्हारी ओर से नहीं, परमेश्वर का दान है - और न कर्मों के कारण, ऐसा न हो कि कोई घमण्ड करे (इफिसियों २:८-९)।**

तीसरा प्रलोभन: विरोधी ने तब सभी ढोंग छोड़ दिए और **यीशु** को भ्रष्ट करने के लिए एक अंतिम, बेताब प्रयास किया। **उसने** अंततः **अपने** अंतिम उद्देश्य को प्रकट किया: मसीहा को उसकी पूजा करने के लिए प्रेरित करना। उसने सबसे पहले सुझाव दिया था कि मसीह को अपने लिए क्या करना चाहिए (पत्थरों को रोटी में बदलना)। इसके बाद **उसने** सुझाव दिया कि पिता को **यीशु** के लिए क्या करना चाहिए (अपने पुत्र को बचाने के लिए **स्वर्गदूतों** को भेजकर **येशु** के लिए पिता के प्रेम को साबित करना)। अब उसने सुझाव दिया कि परीक्षा करने वाला यीशु के लिए क्या कर सकता है - बदले में मसीह उसके लिए क्या कर सकता है - बदले में आप कह सकते हैं। फिर से, **बड़ा अजगर प्रभु को एक बहुत ऊँचे पहाड़ पर ले गया और एक पल में, उसे संसार के सारे राज्य और उनका वैभव दिखाया जिसे यीशु आसानी से प्राप्त कर सकता था यदि वह क्रूस को छोड़ देता (मत्ती ४:८; लूका ४:५)**। **शैतान**, **जो संसार के राज्यों का सरदार था**, और है, **यीशु** को वह प्रस्ताव देने का पूरा अधिकार रखता था।

और उस ने उस से कहा, मैं उनका सारा अधिकार और विभव तुझे दूंगा; यह मुझे दिया गया है, और मैं इसे जिसे चाहूँ दे सकता हूँ।" (मत्ति ४:८; लूका ४:६)। जब तक प्रभु शीर्षक विलेख के साथ पृथ्वी पर नहीं लौटता है (**प्रकाशित बाक्य Ce पर मेरी टिप्पणी देखें - यहूदा के गोत्र का शेर, डेविड की जड़ विजयी हुई है**), **शैतान इस युग का देवता है (दूसरा कुरिन्थियों ४: ४)**. लेकिन **यीशु** को **झुकने और उसकी पूजा करने के लिए कहने से, मसीहा खुद** को अधीनता में रख रहा होगा, और **विरोधी** की श्रेष्ठता को स्वीकार कर रहा होगा। इससे क्रॉस को दरकिनार करने और वैसे भी **मसीहा** के लक्ष्य को प्राप्त करने का लाभ होगा। यह ऐसा था मानो **शैतान** कह रहा हो, "जो तुम्हारा है, उसके लिए तुम्हें क्यों प्रतीक्षा करनी चाहिए? अब आप इसके लायक हैं! जब आप एक राजा के रूप में शासन कर सकते हैं तो आप एक सेवक के रूप में समर्पण क्यों करते हैं? मैं तुम्हें केवल वही दे रहा हूँ जिसकी प्रतिज्ञा **पिता** ने पहले ही कर दी है।" येशु को क्रूस पर मरने से रोकने के लिए यह **प्राचीन सर्प** का अंतिम प्रयास नहीं होगा। लेकिन यहाँ, **मसीह** उस शक्ति और धन को देख सकता था जो उसका होगा; इस प्रकार, यह **प्रलोभन आँखों** की वासना के क्षेत्र में था। यह **परमेश्वर** के उद्धार के कार्यक्रम के प्रति **यीशु** के समर्पण की परीक्षा थी।

शैतान झूठा और झूठ का पिता है, और उस में कोई सच्चाई नहीं है (यूहन्ना ८:४४)। जंगल में उसने वास्तव में जो मांग की वह **मसीहा** की आत्मा थी: **यदि तू झुकेगा और मेरी आराधना करेगा, तो जो कुछ तू देखता है वह सब तेरा होगा (मत्ती ४:९; लूका ४:७)**। **प्रलोभक** ने पहले स्थान पर परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह किया था क्योंकि वह त्रिएकत्व के बाद दूसरा होना बर्दाश्त नहीं कर सकता था। यहाँ, **उसने** सोचा, यह **उसका** महान अवसर था। **वह** अपने बेटे को अपने चरणों में पूजा करने के लिए रिश्वत दे सकता था। जब आप **उसके** साथ व्यवहार करते हैं, तो **वह** हमेशा आपको आपकी इच्छा से अधिक ले जाता है, और आप जितना भुगतान करना चाहते हैं **उससे** अधिक कीमत चुकाता है। हाल ही में **उसने** आपको अपनी शर्तों पर किस शॉर्टकट की पेशकश की है?

यीशु ने **व्यवस्थाविवरण ६:१३** को उद्धृत करते हुए उत्तर दिया जहाँ **इस्राएल** को केवल **यहोवा** की सेवा करने के लिए परखा गया था; हालाँकि, **वह** ऐसा करने में विफल रही (एक्सोडस **Gr पर मेरी टिप्पणी**

देखें - हारून ने एक बछड़े के आकार में एक मूर्ति बनाई)। लेकिन यीशु ने शैतान से कहा: मुझ से दूर, **शैतान**! क्योंकि तानाख कहता है: **"अपने परमेश्वर यहोवा को दण्डवत करो, और केवल उसी की सेवा करो" (मत्तीयाहू ४:१०; लूका ४:८ सीजेबी)**। एक बार फिर प्रभु ने **व्यवस्थाविवरण** को उद्धृत किया, इस बार **व्यवस्थाविवरण ६:१३** से। पहला आदम अदन की वाटिका में एक सिद्ध और सामंजस्यपूर्ण वातावरण में **पाप** में गिर गया, जबकि अंतिम आदम ने शत्रुतापूर्ण वातावरण में अपनी निष्पापता को बनाए रखा।

जब **यीशु** ने इन प्रलोभनों का विरोध किया, तो उसने **बड़े अजगर** को डाँटा नहीं, **उसका** नाम नहीं लिया, न ही **उसे** बाँधा। **मसीहा** ने **व्यवस्थाविवरण ६:१६** का हवाला दिया। और हर बार **शैतान** या तो मीसा शास्त्रों को लागू किया, या उन्हें धोखे से इस्तेमाल किया, जो उसकी पसंदीदा चालों में से एक है। **यीशु ने केवल आत्मा की तलवार से अपनी रक्षा की, जो कि परमेश्वर का वचन है (इफिसियों ६:१७b)**। यह एक ऐसी चीज़ है जिसे **शैतान** बर्दाश्त नहीं कर सकता! शास्त्र **उसे** हर बार परास्त करते हैं। तीन बार **मसीह** ने **व्यवस्थाविवरण** का हवाला दिया। हमें भी **उसका** इसी तरह विरोध करना चाहिए।283

मत्ती और **लूका** दोनों ही तीन प्रलोभनों को लिपिबद्ध करते हैं, परन्तु **लूका** अन्तिम दो के क्रम को उलट देता है। मत्ती ४:५ में फिर क्रियाविशेषण (ग्रीक: टोटे) और श्लोक ८ में फिर से (यूनानी: पॉलिन) इंगित करता है कि मत्तित्याहु घटना को कालानुक्रमिक रूप से दर्ज कर रहा है। दूसरी ओर, **लुका** संयोजन और (ग्रीक: काई) का उपयोग करता है, जो अनुक्रमिक क्रम का सुझाव नहीं देता है। जबकि **मत्ति** घटना को कालानुक्रमिक रूप से दर्ज करता है, **लुका** सामयिक रूप से प्रलोभनों को सूचीबद्ध कर सकता है। ल्यूक के लिए, **मंदिर के पहाड़ के उच्चतम बिंदु पर** प्रलोभन घटना का चरमोत्कर्ष था। सुसमाचारों के इस सामंजस्य में, मैं मत्तित्याहू के कालानुक्रमिक क्रम का उपयोग करता हूं।

ऐसे प्रलोभनों से सावधान रहें, जिनकी कीमत फिलहाल कम लग रही है। **शैतान** आपसे **अपने** तरीके से काम करवाने की उम्मीद करता है। और **वह** आसानी से हार नहीं मानता। जब **धोकेबाज** ने **यीशु** की **परीक्षा पूरी कर ली**, तो **उसे और समय के लिये छोड़ दिया (लूका ४:१३)**। **शैतान** अभी भी **मसीह** की सारी सेवकाई के दौरान सक्रिय था **(लूका ८:१२, १०:१७-१८, ११:१४-२२, १३:११-१७, २२:२८)**। बल्कि, यह कथन इंगित करता है कि **प्राचीन सर्प** के साथ एक सीधा टकराव (जैसा कि हम यहां तीन प्रलोभनों में पढ़ते हैं) गिरफ्तारी, परीक्षण और सूली पर चढ़ाए जाने तक फिर से नहीं हुआ।

यीशु जंगली जानवरों के साथ था, और स्वर्गदूत आए और उपस्थित हुए, या उसकी सेवा की (मत्ती ४:११; मरकुस १:१३b)। **उपस्थित** शब्द अपूर्ण काल में है, जो निरंतर क्रिया का संकेत देता है। पूरे **चालीस दिनों** के दौरान, **स्वर्गदूत** लगातार उसकी सेवा करते रहे। यह आध्यात्मिक संकट की एक ज्वलंत तस्वीर है। केवल दूसरी बार ऐसा गतसमनी के बगीचे में होता है **(लूका २२:४३-४४)**। हमें यह नहीं बताया गया है कि **स्वर्गदूतों** की सेवकाई में क्या शामिल है, परन्तु निश्चित रूप से वे **यीशु** की भूख मिटाने के लिए भोजन लाए थे। हम जानते हैं कि वे **परमेश्वर** की आराधना किए बिना उसकी उपस्थिति में नहीं हो सकते थे। और निश्चित रूप से वे **पिता** से आश्वासन और प्रेम के मजबूत शब्दों को लाए बिना स्वर्ग से नहीं आ सकते थे।

यीशु ने न केवल अपने मसीहा होने की इन महत्वपूर्ण परीक्षाओं को पास किया, बल्कि उसका वचन आज भी हमारे लिए कुछ महत्वपूर्ण सबक प्रदान करता है। **सतर्क रहें और शांत मन के। तुम्हारा शत्रु शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर उसका साम्हना करो, क्योंकि तुम जानते हो, कि संसार भर के विश्वासियों का घराना भी इसी प्रकार के क्लेशों में पड़ा है (पहला पतरस ५:८-९)**। नतीजतन, हमें किसी आध्यात्मिक तरीके से बहस, बंधन, या बहस करके उसका विरोध नहीं करना चाहिए (वैसे, जो भी शैतान को बांध रहा है वह बहुत ही घटिया काम कर रहा है। मुझे नहीं पता कि आप कहाँ रहते हैं, लेकिन मेरे पड़ोस में , टेंपरेचर अभी भी काफी सक्रिय है)। **यीशु ने केवल पवित्रशास्त्र का हवाला दिया। रब्बियों ने समझा कि इजराइल के पास बुराई पर काबू पाने के लिए एक गुप्त हथियार है: पवित्र एक, धन्य है, उसने इज़राइल से कहा, मेरे बच्चों, मैंने दुष्ट आवेग बनाया है, और मैंने टोरा को मारक के रूप में बनाया है इसे; यदि आप अपने आप को टोरा के साथ व्यस्त रखते हैं तो आप इसकी शक्ति में नहीं आएंगे (ट्रैक्टेट किद्दुशिन 30बी)।** क्या हमें भी ऐसा नहीं करना चाहिए?

प्रभु, मुझे **धोखेबाज** के प्रस्तावों को देखने में मदद करें कि वे क्या हैं - पाप के लिए प्रलोभन। मेरी मदद करें कि मैं अपनी आँखों और अपने हृदय को **आप** और **आपके** वचन पर केंद्रित रखूँ, और मेरे कान प्रार्थना में आपकी ओर ध्यान दें। आमीन |